कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 09, (फरवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 06–08

मौसम के अनुसार मधुमक्खियों की देखभाल कैसे करें

[1]रवि कुमार रजक, [1]रागनी देवी, [2]डॉ राम वीर, [3]डॉ. सौरभ कुमार वर्मा,
[1]शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[2]सहायक प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग
[3]सहायक प्राध्यापक, मृदा विज्ञान विभाग
[1]आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज, अयोध्या उत्तर प्रदेश–224229
[2]एसआरएम विश्वविद्यालय दिल्ली एन सी आर सोनीपत हरियाणा–131029, भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय–

मधुमक्खी (माध्वी) एक सामाजिक प्राणी है और समुदाय में रहती है। यह एक सुव्यवस्थित परिवार में निर्धारित श्रम विभाजन' के साथ काम करती है। और अपनी विविध जीवन–क्रियाओं में व्यस्त रहती हुई यह प्रकृति से प्राप्त द्रव्य–संसाधनों (भोजन) को आपस में साझा करके उपयोग करती है। बी–कीपिंग या एपीकल्चर (लैटिन शब्द *'एपिस* अर्थात बी से व्युत्पन्न) अर्थात ''मधुमक्खी पालन'' माध्वी बाक्स या मौनगृह में मधुमक्खी का रख रखाव एवं प्रबन्धन करके शहद, तथा अन्य पदार्थों जैसे मोम, पराग, रॉयल जैली, प्रोपोलिस, मौन विष (बी वैनम) के उत्पादन की कला एवं विज्ञान है। संक्षेप में मधुमक्खी पालन पराग सेवा और मूल्यवान शहद, मोम आदि के उत्पादन से सम्बन्धित उद्योग है।

हमारे यहां पर मधुमक्खियों की चार प्रजातियां पायी जाती हैं जिसमे से भारतीय एवं इटालियन मधुमक्खियां पालतू होती हैं जिनको लकडी के बने हुए आधुनिक बॉक्सों में पालते हैं इसमें से एक पहाडी मधुमक्खी जंगली होती हैं जो देखने में सबसे छोटी होती हैं उनका पालन नही किया जाता हैं और बाकि की जातियां कुछ इस प्रकार से होती हैं और एक सबसे बडी आकार की मधुमक्खी होती हैं जिसका पालन भी नही करते हैं।

(1). **छोटी या मूंगा मधुमक्खी–** यह मधुमक्खियां खुले वातावरण में अपना छत्ता बनाती हैं जो कि टहनी के बीच में एकहर छत्ता बनाती हैं और मौसम के अनुसार स्थान परिवर्तन करती रहती हैं लेकिन यह दूर तक उडकर नही जाती हैं यह सभी तीनों प्रकार की मधुमक्खियों से छोटी होती हैं इसके एक छत्ते में एक वर्ष में एक से डेढ किलोग्राम शहद ही प्राप्त होती हैं।

(2). **पहाडी या सारंग मधुमक्खियां–** इस प्रजाति की मधुमक्खियां अपने छत्ते बहुत ऊंचाई पर लगातीं होती हैं जैसे की पानी की टंकियां हुई, बहुत ऊंची इमारतें हुई और कई सरकारी विश्वविद्यालय की इमारते भी हुई जैसे कि हमने देखा हुआ हैं कि अभी वर्तमान समय में हमारे विश्वविद्यालय में यह मधुमक्खियां अपने छत्तें कई जगह लगाए हुए हैं लेकिन यह स्वभाव में गुस्सैल होती हैं और इसे क्षेत्रीय (लोकल) भाषा में भंवर मक्खी भी बोलते हैं यह आकार में सबसे बडी होती हैं जिसमें एक वर्ष में औसतन 30 से 35 किलोग्राम प्रति छत्ता शहद मिलती हैं।

(3). **भारतीय मधुमक्खियां–** यह मधुमक्खियां अधेरे स्थान पर अपने कई छत्ते बनाती हैं और छत्ता छायादार खंडहर पड़े हुए मकान या

चिमनियां या फिर खोखले स्थान में बनाती हैं जो अभी तक हमने खुद देखा हैं इन मधुमक्खियों का स्वभाव थोडा कम गुस्सैल होता हैं और यह पश्चिम देशों की प्रजातियों से कुछ मिलती जुलती होती हैं इसे कई जगह पर पाला जाता हैं और इसे एक वर्ष में 7 से 10 किग्रा. लगभग शहद पैदा होता हैं।

(4). इटालियन मधुमक्खियां– इस प्रजाति की मधुमक्खियों को 1964 में पश्चिमी देशों से लाया गया था और यह मधुमक्खियां शांत स्वभाव वाली होती हैं और बहुत अधिक मेहनती होती हैं और आकार में पहाडीं मधुमक्खियों से थोडी छोटी होती हैं इससे एक वर्ष में 40 से 50 किलोग्राम शहद प्राप्त किया जाता हैं।

शहद निकालना–

यहां पर सभी प्रकार की मधुमक्खियों के छत्तों से शहद निकाला जाता हैं शहद फूलों के मीठे रस जो मधुमक्खियां चूस कस कर लेती हैं और अपने छत्ते में आकर उडेल देती हैं उस समय रस में पानी की मात्रा लगभग 10 से 70 प्रतिशत तक होती हैं फिर कुछ समय बाद मधुमक्खियां अपने पंखों द्वारा पानी की मात्रा खत्म कर देती हैं और जब पानी की मात्रा 16 से 18 प्रतिशत तक बचती हैं तो मोम के द्वारा मधुमक्खियां छत्तों को या छत्तों की टोपियों को बन्द कर देती हैं तो एसे ही तैयार शहद कहते हैं।

मधुमक्खियों का जीवन चक्र

मधुमक्खियों का जीवन चक्र चार अवस्थाओं में पूरा होता हैं प्रत्येक मधुमक्खी के जीवन चक्र में अण्डा, सूंड़ी, प्युपा और पौढ़ अवस्थाएं होती हैं इसकी रानी मधुमक्खी छत्ते में कोष्ठों के तले पर अण्डे देती हैं इसमें दो प्रकार के अण्डे होते हैं सजीव जो गर्वित होती हैं और निर्जीव जो गर्वित नही होती हैं सजीव अण्डो से रानी और कमेरी मधुमक्खियां पैदा होती हैं और निर्जीव अण्डों से केवल नर मधुमक्खियां पैदा होती हैं इसमें जिसको रानी बनाना होता हैं उसे तीन दिन तक रॉयल जेली खिलाते हैं और जिनको श्रमिक बनाना होता हैं उसे अलग प्रकार का भोजन देते है। इसकी रानी शिशु पांच दिन और कमेरी शिशु 5 से 6 दिन एवं नर शिशु 5 से 6 दिन में बढ़कर युवा अवस्था में पहुंच जाते है। और फिर प्युपा अवस्था में आ जाते है। एवं कुछ समय बाद रानी बन जाती है। इसी प्रकार जीवन चलता रहता है।

महीनों के हिसाब से करें मधुमक्खियों की देखभाल

दिसम्बर से फरवरी महीना (सर्दी) – सर्दियों में मधुमक्खी की कॉलोनियां बडी जल्दी बढ़ती हैं इसलिए फ्रेमों पर मॉमी सीट लगाना बहुत जरुरी होता हैं। और यह मधुमक्खी के लिए बच्चे पैदा करने एवं शहद इकट्ठा करने का अच्छा समय रहता हैं क्योकि इस समय सरसों एवं राई फसलों में फूल खिलते हैं जब कॉलोनी 10 फ्रेमों पर चली जाती हैं तब मधु कक्ष लगाने की जरुरत होती हैं तथा मधुमक्खियां अधिक शहद इकट्ठा करती हैं। अच्छे प्रबन्धन द्वारा इस समय 3–4 बार शहद निकाला जा सकता हैं। फरवरी में नई रानी कोशिकाएं बनती हैं इस समय अच्छी संख्या वाले मधुमक्खी बक्सों का विभाजन करना चाहिए। बक्सों को ठंडी हवाओं से बचाकर खुली धूप में रखा जाए तथा बक्सों को सर्दी से बचाव के लिए सूखी घास या फटे पुराने कपडों की पैकिंग करके ढक दिया जाना चाहिए, बक्सों को हवा की दशा से बचाना चाहिए।

मार्च से मई महीना (बसंत व गर्मी की शुरुआत)–

इस समय नींबू, आड़ू, जामुन, रिजका, बरसीम, सूरजमुखी, सिरिस एवं कई प्रकार की सब्जियां जैसे प्याज, मूली, गोभी, मेथी, गाजर आदि के फूल उपलब्ध होने के कारण शहद इकट्ठा करने व बक्सों में मधुमक्खियों की संख्या बढाने का यह उपयुक्त समय हैं, और मई के अन्त तक शहद निकालने की संभावना रहती हैं, बक्सों को अधिक देर तक खुला न छोडे एवं रोकथाम के उपयुक्त उपाय करने चाहिए।

जून से सितम्बर (गर्मी व बरसात का मौसम)–

यह फूलों की कमी वाला समय हैं और इस मौसम में रानी मक्खी अण्डे कम देती हैं, इसके साथ ही कॉलोनी में भोजन की कमी हो जाती हैं, इस समय मधुमक्खी पालकों को कई समस्याओं का सामना करना पड सकता हैं, इसलिए कॉलोनियों को सुरक्षित रखने के लिए कृमित भोजन और पानी का प्रबंधन जरूर करना चाहिए।

मधुमक्खी का कृतिम भोजन कैसे बनाएं–

जून से सितम्बर के बीच मधुमक्खी वंशों को मकरंद और पराग की कमी का सामना करना पडता हैं तथा मधुमक्खी वंशों की बढवार पर इसका बुरा प्रभाव पडता हैं और वंश भी कमजोर पड जाता हैं इस प्रकार के भोजन की कमी को कृतिम भोजन (बनाया हुआ भोजन) देकर दूर किया जा सकता हैं, ऐसे समय में मकरंद के स्थान पर चीनी की चाशनी 50 प्रतिशत मधुमक्खियों को दी जाती हैं, पराग की कमी होने पर परागपूरक भोजन दिया जाता हैं जिसमें सोयाबीन का आटा 25 भाग, पाउडर दूध,15 भाग, बेकिंग यीस्ट 10 भाग, पिसी हुई चीनी का 40 भाग और शहद के 10 भाग को मिलाकर आटे की तरह गूंथ लें, 100–150 ग्राम की पेडी कागज पर रखकर फ्रेमों पर लटका कर रखें, इस भोजन से रानी मधुमक्खी दोबारा से अण्डा देना शुरु कर देगी।